



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	23.3.24		

The Tribune

‘Witches’ Broom’, a new threat to pea crop

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, MARCH 22

Scientists of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) in Hisar have identified a new and a potentially devastating disease affecting pea crops. Named ‘Witches’ Broom,’ the disease is associated with the pathogen ‘Candidatus Phytoplasma asteris’ (16SrI).

Scientists noticed that approximately 10 per cent of the plants displayed symptoms akin to witches’ broom, characterised by stunted growth and a bushy appearance in the fields over 42.7 hectares, which exhibited abnormalities in pea plants. Furthermore, the flowers underwent a peculiar transformation, turning into green structures. The high infestation observed in some fields led to a significant decline in crop yield, raising concerns among agricultural experts and farmers.

The scientists took swift action and collected plant samples, subjected to molecular identification in collabora-



HAU Vice-Chancellor BR Kamboj with scientists at HAU. TRIBUNE PHOTO

COURSE OF ACTION

- Scientists noticed that approximately 10 per cent of the plants displayed symptoms akin to witches’ broom, characterised by stunted growth and a bushy appearance in the fields over 42.7 hectares, which exhibited abnormalities in pea plants.
- The flowers underwent a peculiar transformation, turning into green structures. The high infestation observed in some fields led to a significant decline in crop yield, raising concerns among agricultural experts and farmers.
- Scientists took swift action and collected plant samples, subjected to molecular identification in collaboration with scientists from IARI in New Delhi. The research team led by Dr Jagmohan Singh Dhillon confirmed the presence of a previously unidentified disease in pea plants, marked by phyllody and witches’ broom symptoms.

tion with scientists from the Indian Agricultural Research Institute (IARI) in New Delhi. After exhaustive analysis, the

research team led by Dr Jagmohan Singh Dhillon (Plant pathologist, CCS HAU, Hisar) confirmed the presence of a

previously unidentified disease in pea plants, marked by phyllody and witches’ broom symptoms. The research

found ‘Candidatus Phytoplasma asteris’ of the 16SrI strain, a pathogen hitherto unencountered in pea cultivation.

The discovery has now been officially documented in the prestigious Plant Disease journal of the American Phytopathological Society, based in the US, with a notable National Academy of Agricultural Sciences (NAAS) rating of 10.50.

The Vice-Chancellor, Professor B R Kamboj lauded the scientists, including Dr Jagmohan Singh Dhillon, Dr Rakesh Kumar and Dr DS Duhan, applauding their outstanding research.

Research efforts are underway to develop strategies for managing and mitigating the impact of witches’ broom on pea cultivation, as its potential to disrupt agricultural economies looms large. The scientific community, together with agricultural stakeholders, is collaborating to understand the disease’s behaviour, spread, and find sustainable solutions to protect pea crops from this newfound threat, the VC said.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	23.3.24		

THE TIMES OF INDIA

INDIA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER

HAU scientist finds new disease in peas

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: A year ago, about 10% of the pea crop at Central State Farm in Hisar was characterised by stunted growth and a bushy appearance. While finding out the scientific reason behind this, agricultural scientists identified a new and potentially devastating disease affecting pea crops, named 'Witches' Broom'. The disease is associated with the pathogen *Candidatus Phytoplasma asteris* (16SrI).

Dr Jagmohan Singh Dhillon, a scientist from Haryana Agricultural University is the first scientist in the world to discover this disease. The groundbreaking discovery has now been officially documented in the prestigious Plant Disease journal of the American Phytopathological Society, based in the USA, with a notable NAAS rating of 10.50.

HAU vice-chancellor Prof B R Kamboj extended congratulations to the scientists from HAU, namely Jagmohan Singh Dhillon, Rakesh Kumar and D S Duhan NAD applauded their outstanding research. He encouraged them to continue their efforts and delve into further research endeavours.

Jeet Ram Sharma, director of research, also commended the team for their research efforts.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	23.3.24		

दैनिक भास्कर

खोज • अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता, रोग नियंत्रण पर काम शुरू करने को कहा एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर में नई बीमारी खोजी, मटर की फसल में 10% पौधे हो जाते हैं बौने और झाड़ीदार

भास्कर न्यूज़ | हिंसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु कैडिडेट्स फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस 16 एसआर 1 की खोज की है। नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी एपीएस, यूएसए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लान्ट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी एपीएस पौधों की बीमारियों के अध्ययन के

लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है, जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। एचएयू के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने फाइटोप्लाज्मा मटर में बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन किया है। एचएयू कुलपति डॉ. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द काम शुरू करना चाहिए।

डॉ. जगमोहन पहले शोधकर्ता, इनका रहा अहम योगदान



इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता एवं विवि के प्लान्ट पैथोलॉजिस्ट डॉ. जगमोहन सिंह दिल्ली ने कहा कि कई रूपात्मक, आणविक व रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु कैडिडेट्स फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एस.आर. 1) इस बीमारी का कारक है। इस रोग से ग्रसित मटर के पौधे बौने और झाड़ीदार हो जाते हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. राकेश कुमार चुध, डॉ. धर्मवीर दूहन और आईएआरआई, नई दिल्ली से डॉ. हेमावती व डॉ. कीर्ति रावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

वर्ष 2023 में मटर की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि पहली बार फरवरी-2023 में सेन्ट्रल स्टेट फार्म, हिंसार में मटर की फसल में नई तरह की बीमारी दिखाई दी। इसमें मटर के 10% पौधे बौने और झाड़ीदार हो गए थे। एचएयू के वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत के बाद इस बीमारी के कारक कैडिडेट्स फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस 16 एसआर 1 की खोज की है। बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

23.7.24

दैनिक जागरण

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी मटर की नई बीमारी



मटर में नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. काम्बोज। • पीआरओ

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु कैडिडेट्स फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) की खोज की है। पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी (एपीएस), यूएसए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लांट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी (एपीएस) पौधों की

बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डा. जगमोहन दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने फाइटोप्लाज्मा मटर में बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बीआर काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है।

वर्ष 2023 में मटर की फसल में दिखाई दिए थे

लक्षण : अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने बताया कि पहली बार फरवरी-2023 में सेंट्रल स्टेट फार्म हिसार में मटर की फसल में नई तरह की बीमारी दिखाई दी। मटर के 10 प्रतिशत पौधे बौने और झाड़ीदार हो गए थे। एचएयू के वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत के बाद बीमारी के कारक कैडिडेट्स फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) की खोज की है।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम

योगदान : बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डा. जगमोहन सिंह दिल्ली ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी यूएसए द्वारा मार्च 2024 के दौरान इस शोध रिपोर्ट को प्रकाशन किया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। डा. दिल्ली ने कहा कि कई रूपात्मक, आणविक और रोगजनकर्ता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु कैडिडेट्स फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) इस बीमारी का कारक है। इस रोग से ग्रसित मटर के पौधे बौने और झाड़ीदार हो जाते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	23.3.24		

हरिभूमि

हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

शोध

अंतरराष्ट्रीय संस्था अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी ने दी बीमारी को मान्यता

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी मटर की नई बीमारी

हरिभूमि न्यूज » हिंसार



हिंसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मटर की नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।
फोटो: हरिभूमि

से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने फाइटोप्लाज्मा मटर

में बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन किया है। विवि के कुलपति डॉ. बीआर काम्बोज ने शुक्रवार को वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. जगमोहन सिंह दिल्ली ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी, यूएसए द्वारा मार्च, 2024 के दौरान इस शोध रिपोर्ट को प्रकाशन किया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। डॉ. दिल्ली ने कहा कि कई स्पात्मक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) इस बीमारी का कारक है। इस रोग से ग्रस्त मटर के पौधे बौने और झाड़ीदार हो जाते हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. राकेश कुमार गुप्त, डॉ. धर्मवीर दूहन और आईएसआरआई, नई दिल्ली से डॉ. हेमवती व डॉ. कर्ति रावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

2023 में फसल में दिखाई दिए थे लक्षण

अनुसंधान निदेशक डॉ. जोतराम शर्मा ने बताया कि पहली बार फरवरी-2023 में जेंद्रन स्टेट फार्म, हिंसार में मटर की फसल में नई तरह की बीमारी दिखाई दी, जिसमें मटर के 10 प्रतिशत पौधे बौने और झाड़ीदार हो गए थे। एचएयू के वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत के बाद इस बीमारी के कारक कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) की खोज की है। उन्होंने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी

के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने की कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

23.3.24

भारत में 1.17 करोड़ से अधिक पाठक (IRS 2019)

PUNJAB KESARI HISSAR

पंजाब केसरी

Saturday • 23 March 2024 www.punjabkesari.in हिंसार • पानीपत • जालंधर • चंडीगढ़ • लुधियाना • बठिंडा • शिमला • पालमपुर • जम्मू • जयपुर • अजमेर से प्रकाशित

हकृवि वैज्ञानिकों ने खोजी मटर की नई बीमारी

अंतर्राष्ट्रीय संस्था अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता, हकृवि के वैज्ञानिक डा. जगमोहन हैं पहले शोधकर्ता

हिसार, 22 मार्च (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एस.आर. 1) की खोज की है। पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी (ए.पी.एस.), यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लान्ट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है।

ए.पी.एस. पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मटर की नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।

वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने फाइटोप्लाज्मा मटर में बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण

हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए।

वर्ष 2023 में मटर की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण: अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने बताया कि पहली बार फरवरी-2023 में सेंट्रल स्टेट फार्म हिसार में मटर की फसल में नई तरह की बीमारी दिखाई

दी जिसमें मटर के 10 प्रतिशत पौधे बौने और झाड़ीदार हो गए थे। एच.ए.यू. के वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत के बाद इस बीमारी के कारक कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एस.आर. 1) की खोज की है। उन्होंने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान: इस बीमारी के मुख्य

शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डा. जगमोहन सिंह दिल्ली ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी यू.एस.ए. द्वारा मार्च, 2024 के दौरान इस शोध रिपोर्ट का प्रकाशन किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। डॉ. दिल्ली ने कहा कि कई रूपात्मक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एस.आर. 1) इस बीमारी का कारक है। एच.ए.यू. के वैज्ञानिकों डा. राकेश कुमार चुध, डा. धर्मवीर दुहन और आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली से डा. हेमावती व डा. कीर्ति रावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

23.3.24

अमर उजाला

शोध

अंतरराष्ट्रीय संस्था एपीएस ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक डॉ. जगमोहन हैं पहले शोधकर्ता

एचएयू के वैज्ञानिकों ने खोजी मटर की नई बीमारी

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी और इसके कारक जीवाणु कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) की खोज की है। पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी

(एपीएस) से प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लांट डिजीज में इस नई बीमारी संबंधी वैज्ञानिकों की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में स्वीकार किया है।

एपीएस पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। एचएयू के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की



खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ एचएयू के कुलपति। -संस्थान

है। कहा कि कई रूपात्मक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर यह साबित हुआ कि एक जीवाणु कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) इस बीमारी का कारक है। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. राकेश चुध, डॉ. धर्मवीर दूहन, आईएआरआई, नई दिल्ली से डॉ. हेमावती और डॉ. कीर्ति रावत ने इस शोधकार्य में योगदान दिया।

खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने फाइटोप्लाज्मा मटर में बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान कर अपने जर्नल में प्रकाशित किया है। एचएयू के कुलपति डॉ. बीआर कांबोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण है। उन्होंने वैज्ञानिकों से

बीमारी के प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने और रोग नियंत्रण पर जल्द काम शुरू करने के लिए कहा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि फरवरी-2023 में सेंट्रल स्टेट फार्म, हिसार में मटर की फसल में पहली बार नई तरह की बीमारी दिखाई दी, जिसमें मटर के 10 प्रतिशत पौधे बौने और झाड़ीदार हो गए थे। वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत से बीमारी के

इनका अहम योगदान : इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. जगमोहन सिंह दिल्ली ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी ने मार्च 2024 के दौरान इस शोध रिपोर्ट को प्रकाशित किया

10

प्रतिशत मटर के पौधे बीमारी के कारण बौने और झाड़ीदार हो गए थे

कारक खोज की है। इसका नाम कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) है। इस बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी। मौके पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, सब्जी विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके तेहलान, पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल, डॉ. संदीप और कपिल अरोड़ा आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

दैनिक हिन्दू

23.3.24

11

4-6

बौने और झाड़ीदार हो गए थे पौधे, हकृवि वैज्ञानिक ने खोजी मटर में नयी बीमारी

हिसार 22 मार्च (हम)

एक साल पहले हिसार के सेंट्रल स्टेट फार्म की मटर की फसल के करीब 10 प्रतिशत पौधे बौने और झाड़ीदार हो गए। हकृवि वैज्ञानिक ने जब इसके पीछे का वैज्ञानिक कारण पता किया तो मटर की नयी बीमारी व इसके कारक जीवाणु कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) की खोज हो गई। मटर की इस बीमारी की खोज करने वाले वाले हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के वैज्ञानिक डॉ. जगमोहन सिंह दिल्ली दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं।

पौधों में नयी बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी (एपीएस), यूएसए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लान्ट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नयी बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता भी दे दी है।

विवि के कुलपति डॉ. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए



हिसार में शुक्रवार को हकृवि के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज मटर की नयी बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ। -हप्र

बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल वींगड़ा, सब्जी विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान, पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व एसवीसी कपिल अरोड़ा भी मौजूद रहे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी। इस

बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. जगमोहन सिंह दिल्ली ने कहा कि कई रूपात्मक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एस.आर. 1) इस बीमारी का कारक है। इस रोग से ग्रसित मटर के पौधे बौने और झाड़ीदार हो जाते हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. राकेश कुमार चुष, डॉ. धर्मवीर दूहन और आईएआरआई, दिल्ली से डॉ. हेमावती व डॉ. कीर्ति रावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उज्ज्वल समाचार	23.3.24	5	2-5

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी मटर की नई बीमारी

हिसार, 22 मार्च (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु कैडिडैटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एस.आर. 1) की खोज की है। पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.); यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लांट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने फाइटोप्लाज्मा मटर में बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर



कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज मटर की नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ।

पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों की इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल बीगड़ा,

सब्जी विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान, पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व एसवीसी कपिल अरोड़ा भी मौजूद रहे। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि पहली बार फरवरी-2023 में सेन्ट्रल स्टेट फार्म, हिसार में मटर की फसल में नई तरह की बीमारी दिखाई दी, जिसमें मटर के 10 प्रतिशत पौधे बौने और झाड़ीदार हो गए थे। एचएयू के वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत के बाद इस बीमारी के कारक कैडिडैटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एस.आर.

1) की खोज की है। उन्होंने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी। इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. जगमोहन सिंह दिल्ली ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, यूएसए द्वारा मार्च, 2024 के दौरान इस शोध रिपोर्ट को प्रकाशन किया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। डॉ. दिल्ली ने कहा कि कई रूपात्मक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु कैडिडैटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एस.आर. 1) इस बीमारी का कारक है। इस रोग से ग्रसित मटर के पौधे बौने और झाड़ीदार हो जाते हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. धर्मवीर दूहन और आईएआरआई, नई दिल्ली से डॉ. हेमावती व डॉ. कीर्ति रावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहु	23.3.24	7	58

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी मटर की नई बीमारी

■ अंतर्राष्ट्रीय संस्था अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता



हिसार (सच कहु/संदीप सिंहमार)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एस.आर. 1) की खोज की है। पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस), यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लान्ट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध

रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। ए.पी.एस पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्व स्तरीय प्रकाशन करती है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी

की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने फाइटोप्लाज्मा मटर में बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन किया है।

उन्होंने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर

2023 में मटर की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण

उन्होंने बताया कि पहली बार फरवरी-2023 में सेन्ट्रल स्टेट फार्म, हिसार में मटर की फसल में नई तरह की बीमारी दिखाई दी, जिसमें मटर के 10 प्रतिशत पौधे बौने और झाड़ीदार हो गए थे। एचएयू के वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत के बाद इस बीमारी के कारक कैडिडेटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस की खोज की है। उन्होंने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
देशिक जागरण	24-3-24	11	6-7

अब कृषि अधिकारियों को मिलेगी ट्रेनिंग, एक होगी एडवाइजरी

जागरण संवाददाता, हिसार : प्रदेश में कपास की बिजाई का समय नजदीक आ रहा है। अप्रैल के दूसरे सप्ताह में इसकी बिजाई शुरू होने की उम्मीद है। कपास की फसल पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप हर बार किसानों को नुकसान पहुंचाता रहा है। इस साल फसल की बिजाई से पहले ही कृषि अधिकारियों के साथ मिलकर विज्ञानियों की तरफ से किसानों को जागरूक किया जाएगा।

कृषि विज्ञानियों की तरफ से किसानों को फील्ड में गुलाबी सुंडी से बचने के तरीके बताए जाएंगे। इसके साथ ही विज्ञानियों की तरफ से किसानों के लिए अब एक ही एडवाइजरी जारी करने का निर्णय लिया गया है। यह निर्णय पिछले दिनों हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में हुए कृषि अधिकारियों और विज्ञानियों के मंथन के बाद लिया गया है।

किसानों द्वारा अप्रैल के दूसरे सप्ताह में कपास की बिजाई की जाती है। फसल पकने के साथ ही कपास पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा होता है। हर साल करोड़ों रुपये का नुकसान किसानों को उठाना पड़ता है। किसान फसल पर छिड़काव भी कर रहे हैं लेकिन यह सुंडी कपास को काफी ज्यादा नुकसान पहुंचा रही है। इसका ज्यादा प्रकोप अंतिम चरण में बिजाई की जाने वाली कपास या सितंबर में होता है। उस समय तक गुलाबी सुंडी फसल पर पूरी तरह से प्रभावी दिखती है। इसको रोकने के लिए मंथन के बाद कृषि विभाग

एक ही सलाह होगी जारी

गुलाबी सुंडी से फसल को बचाने के लिए अब एक ही एडवाइजरी जारी की जाएगी। अभी हर विधि या संस्थान अलग-अलग एडवाइजरी देता है। उसका नुकसान नहीं है लेकिन दवाई अलग-अलग होने से किसान परेशान हो जाता है कि वह किस का प्रयोग करेंगे।

किसान यह रखें सावधानियां

- कपास की बिजाई से पहले बंधटियों को अपने खेत से हटा दें।
- बिजाई बहुत जल्दी न करें
- कृषि विज्ञानियों से राय करके की स्रो करें
- विश्वविद्यालय की तरफ से सिफारिश किए गए बीज की ही बिजाई करें।

गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ने से किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक चिंतित है। किसानों को नुकसान न हो इसको लेकर सामूहिक प्रयास किए जा रहे हैं।
प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति,
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

के एडीओ, बीटीएम सहित अनेक अधिकारियों व फिल्ड आफिसर किसानों से मिलेंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	23.03.2024	--	--

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी मटर की नई बीमारी

सवेरा ब्यूरो

चंडीगढ़, 22 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिंसार के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु कैडिडैटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस (16 एसआर 1) की खोज की है। पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटो पैथोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस), यूएसए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लान्ट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। एपीएस पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक

अंतरराष्ट्रीय संस्था अमेरिकन फाइटो पैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता

है, जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्व स्तरीय प्रकाशन करती है। कुलपति डॉ. बीआर काम्बोज ने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने फाइटोप्लाज्मा मटर में बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है। जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन किया है। बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर

पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए।

वर्ष 2023 में मटर की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण : उन्होंने बताया कि पहली बार फरवरी 2023 में सेंट्रल स्टेट फार्म हिंसार में मटर की फसल में नई तरह की बीमारी दिखाई दी। जिसमें मटर के 10 प्रतिशत पौधे बौने और झाड़ीदार हो गए थे। एचएयू के वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत के बाद इस बीमारी के कारक कैडिडैटस फाइटोप्लाज्मा एस्टेरिस की खोज की है। बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	22.03.2024	--	--

आज का विचार
 बात में उजन पैदा करने के लिए
 आज का उच्च शिक्षा जस्टी
 नहीं बल्कि बात का सच्चा होना
 जस्टी है।

सिटीपल्स हिस्सार

सांध्य दैनिक

कृषया अपनी पेंस
 विज्ञान सिटीपल्स
 हिस्सार की मेल आईडी
 cphisar99@gmail.com
 पर पोषित करें
 - प्रबंधक

कुल पृष्ठ - 4 | मूल्य - 2.00 | वर्ष-7, अंक- 207

हिस्सार, शुक्रवार, 22 मार्च, 2024 | कानूनांग, शुक्ल पक्ष त्रयोदशी, विक्रमी संवत् 2080

ई-पेपर 89 www.citypulse.news

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी मटर की नई बीमारी, एचएयू के वैज्ञानिक डॉ. जगमोहन हैं पहले शोधकर्ता

सिटी पल्स न्यूज, हिस्सा। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है। एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है। एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है।



कृषि विभाग के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

इस बीमारी के कारण खोजने और विश्वविद्यालय के एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है। एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है।

वर्ष 2023 में मटर की बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है। एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है।

कृषि विभाग के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है। एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है।

इस बीमारी के कारण खोजने और विश्वविद्यालय के एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है। एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है।

इस बीमारी के कारण खोजने और विश्वविद्यालय के एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है। एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है।

इस बीमारी के कारण खोजने और विश्वविद्यालय के एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है। एचएयू के वैज्ञानिकों ने मटर की नई बीमारी से इसका कारण बताने का पहला वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया है।